गुरु नानक - सबद ८३

बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५८

बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥
ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥
दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥
मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥
बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥
सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥
गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥
सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥
मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥
हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥
मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥
इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥
संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥४॥
खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥
सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ॥
साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥५॥
वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥
कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥
पूँजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥६॥
गुरमुखि तोलि तोुलाइसी सचु तराजी तोलु ॥
आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥
आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥७॥
कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥

काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥
नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥८॥९॥

सार: भारतीय दर्शन में निहित यह चार गुण हमें आत्म-जागरूकता और धार्मिकता के माध्यम से अपने भीतर स्थित श्रेष्ठताओं को जगाने की शक्ति देते हैं। दया सभी प्राणियों में दिव्य तत्व को पहचानकर करुणा का विकास करती है। सत हमारे इरादों और कामों को एकरूप करके सत्यनिष्ठा को प्रोत्साहित करता है। संतोख कृतज्ञता को बढ़ावा देकर असंतोष और बेचैन करने वाली इच्छाओं से मुक्त कराता है। विवेक हमारी समझ को तेज़ करता है जिससे हमें सच और भ्रम में फर्क करने और सोच-समझकर, समझदारी भरे फैसले लेने में मदद मिलती है। इन गुणों को अपनाने से सजग, संतुलित और जागरूक जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है।

बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥
जीवनसाथी के बिना श्रृंगार और यौवन व्यर्थ होता है। यह बताता है कि आंतरिक जुड़ाव के बिना बाहरी दिखावे की चमक-दमक का कोई मूल्य नहीं होता।

ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥
सजी हुई शादी की सेज कोई सुख नहीं देती, प्रियतम के बिना सारा श्रृंगार बेकार है। यह इस बात का प्रतीक है कि जागरूकता से जुड़ने की तैयारी तो हो सकती है परंतु यदि अपने सच्चे स्वरूप को नहीं अपनाया जाए, तब सभी प्रवृत्तियाँ निरर्थक हो जाती हैं।

दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥
दुर्भागी साथी को बहुत दुख होता है क्योंकि प्रियतम घर में नहीं रहता है। यह दिखाता है कि कैसे अंदरूनी अलगाव आध्यात्मिक खालीपन की ओर ले जा सकता है। (१)

मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥
हे मन, स्मरण में सर्वव्यापी चेतना पर ध्यान करो जिससे शांति मिलती है। यहाँ पता चलता है कि अंदर की ओर मुड़ने से एकता की साफ़ समझ बढ़ती है, जिससे हर पल शांति फैलती है।

बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥

ज्ञान के सार के बिना, प्यार नहीं मिल सकता। जब आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि जागृत होती है तब आनंद उत्पन्न होता है। यह बताता है कि सुख विभाजन से नहीं, एकत्व से प्रकट होता है। (१)(विराम)

गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥

ज्ञान के सार के लिए स्वयं को समर्पित करके शांति मिलती है, तब प्रिय सर्वव्यापी चेतना सहज ही आंतरिक सौंदर्य बन जाती है। इसका अर्थ है कि चिंतन के द्वारा हमारे विचार संतुलित होते हैं और हमारी अंतर्निहित गुण सहज रूप से अभिव्यक्त होते हैं।

सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥

वनसाथी सच्चे प्रेम के भाव से प्रेरित होकर अपने प्रियतम के साथ आनंद का अनुभव करता है। यह दुनिया में जागरूकता बढ़ाने के गहरे इरादे से अपने सच्चे स्वरूप को अपनाने की ख़ुशी को दिखाता है।

गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥

ज्ञान-युक्त व्यक्ति समझता है कि अंतर्दृष्टि से आध्यात्मिक चार गुणों की प्राप्ति होती है। यह सत्य, विवेक, संतोष और दया जैसे गुणों के आत्मसात होने का संकेत है। (२)

सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥

सत्यपूर्वक प्रियतम को स्वीकार करने पर प्रेम मनोहर और आनंदमयी हो जाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि जब हम प्रकृति के नियमों को अपनाकर सर्वव्यापी जागरूकता का आदर करते हैं तब इससे सार्वभौमिक सद्भाव और शांति आती है।

मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥

जब मन और शरीर सत्यवादी होने में आनंद पाते हैं तब इसका मूल्य वर्णन से परे होता है। यह दर्शाता है कि ईमानदारी से उत्पन्न मुक्ति इतनी गहरी है कि यह केवल शब्दों में अभिव्यक्त नहीं हो सकती।

हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥३॥
सर्वव्यापी, प्रिय जागरूकता उन भाग्यशाली लोगों के विवेक में निवास करती है जो यह पहचानते हैं कि चिंतन के अभ्यास के माध्यम से पवित्रता प्राप्त की जा सकती है। (३)

मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥
जब मन का अहंकार समाप्त हो जाता है तभी साथी अपने प्रियतम से मिलन का आनंद पाता है। अर्थात जब 'मैं, मुझे और मेरा' की खुदगर्ज़ी खत्म हो जाती है, तभी सर्वव्यापी जागरूकता से सच्चा मेल होता है।

इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥
बिखरे मोती एक चमकदार हार में बदल जाते हैं जब एक धागे में पिरोए जाते हैं। यह उस पूर्णता का प्रतीक है जो तब आती है जब विविध जीवन रूप, हर एक अपनी ख़ासियतों के साथ, सार्वभौमिक एकत्व की अनुभूति के साथ जुड़ते हैं।

संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥४॥
आध्यात्मिक रूप से जागे हुए लोगों की संगत शांति बढ़ाती है। ज्ञान-युक्त लोग चिंतन का सहारा लेते हैं। (४)

खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥
क्षण में उत्पन्न होकर क्षण में मिटना, एक पल में आता है और एक पलक में चला जाता है। आने और लुप्त होने का यह चक्र हमारी भावनाओं, विचारों और बंधनों के सक्रिय स्वभाव को दर्शाता है जो उनकी नश्वरता को समझने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ॥
जो लोग ज्ञान के सार को पहचान कर उस पर चिंतन करते हैं वह समय बीतने से खुद को अप्रभावित पाते हैं। यह एक अनुस्मारक के रूप में काम करता है कि जागरूकता हमें परिवर्तन का सामना करने में स्थिरता की शक्ति देती है।

साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥५॥

अनन्त और सर्वव्यापी स्रोत अथाह है जिसे मापा नहीं जा सकता। शब्द इसकी उपस्थिति को पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर सकते। यह अस्तित्व के रहस्य को विनम्रता के साथ समझने, निश्चितता और निर्णय के बजाय इसकी विस्मयकुलता को अपनाने का स्मरण कराता है। (५)

वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥

व्यापारी अपना सामान, जिसे संभालने की ज़िम्मेदारी उनकी है, लेकर व्यापर में शामिल होने आए हैं। यह उदाहरण हमें याद दिलाता है कि दुनिया एक जीवंत बाज़ार है जहाँ प्रकृति का हर तत्व हमारे सामूहिक अनुभवों की विविधता में योगदान देता है।

कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥

जिनके कर्मों में सच्चाई का अभ्यास शामिल है उन्हें प्रकृति की इच्छा के साथ तालमेल बिठाकर जीने का फ़ायदा मिलता है।

पूँजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥६॥

जो लोग ज्ञान के ज़रिए सच्चाई को पूंजी के रूप में हासिल करते हैं जो उन्हें अज्ञानता से जागरूकता की ओर ले जाती है वह एक पल के लिए भी लालच का कण नहीं रखते हैं। (६)

गुरमुखि तोलि तोुलाइसी सचु तराजी तोलु ॥

जो लोग विवेक से जुड़े होते हैं वह अपने इरादों को जांचते और तोलते हैं, उन्हें सच्चाई के पैमाने पर मापते हैं। यह दर्शाता है अंतरात्मा के साथ तालमेल बिठाकर जीने और ईमानदारी बनाए रखने की प्रतिबद्धता को।

आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥

इच्छाएँ और अपेक्षाएँ मोहक हैं, पर उन्हें ज्ञान के सार से नियंत्रित किया जा सकता है जो सच्चाई व्यक्त करता है। इससे पता चलता है कि अज्ञानता अधूरी उम्मीदों के दर्द को और गहरा कर सकती है जबकि बेक़ाबू इच्छाएं हमें आसानी से गुमराह कर सकती हैं।

आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥७॥
आत्मचिंतन से व्यक्ति स्वयं का आंकलन कर सकता है और अपने जीवन को संपूर्णता की ओर ले जा सकता है। यह बताता है कि अर्थपूर्ण चिंतन से अपने कामों और इरादों को बेहतर बनाने की सच्ची कोशिश हो सकती है। (७)

कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥
सिर्फ़ उद्घोषणा करने और प्रवचन देने से मुक्ति नहीं मिलती। न ही अधिक ग्रंथ पढ़ने से मिलती है ।

काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥
भक्ति और अनंत एकत्व के लिए प्रेमभाव के बिना, अस्तित्व विचारों में स्पष्टता नहीं ला सकता।

नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥८॥९॥
नानक कहते हैं कि आत्म-चिंतन को कभी नहीं भूलना चाहिए और उस विवेक को पाने का प्रयास करना चाहिए जो सर्वव्यापी रचना का सार है। (८)(९)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि हमारी अपेक्षाएँ और इच्छाएँ जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करती हैं। अपरीक्षित उम्मीदें निराशा और क्रोध का कारण बन सकती हैं जबकि अनियंत्रित इच्छाएँ हमारी बुद्धि पर पर्दा डाल देती हैं। आत्मचिंतन के द्वारा हम यह समझ पाते हैं कि क्या वास्तव में सार्थक है और क्या केवल भ्रम। यह स्पष्टता हमें अपनी उम्मीदों को कम करने और अपनी इच्छाओं को संयमित करने में मदद करती है जिससे हम जीवन को अधिक संतुलन और गहन दृष्टि के साथ जी पाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com